International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 257-258

पजांबी प्राथमिक पाठशालाओ मे शिक्षक पालक संगठना की परिणाम

डॉ0 सतनाम सिंह

Ph.D. (Education), Chaudhary Charan Singh University, Meerut, Uttrar Pardesh, India

प्रस्तावना

प्राचीनकाल में शिक्षा एक अलग स्परूप रखती है। शिक्षा घर समाज से दूर एक अलग स्थान पर दि जाती थी कही गुरूकुल खानखा धर्मशालाओ में यहां बालक को शिक्षा एक व्यक्ति देता था जो गुरू कहलाता था। आज शिक्षा का स्वरूप बदलता जा रहा है क्योकि शिक्षा समाज से जुडी होती है। और समाज प्रगतीशील होता है। प्राचीन काल में शिक्षक को सम्मान दिया जाता था। आज के इस वैज्ञानिक युग की ये देन है। के छात्र पाठयपुस्तक द्वारा शिक्षा प्राप्त करना चाहते है। इस का केवल घर का वातावरण है। जो पालको का छात्रो की शिक्षा पर ध्यान न देना है। इस के आलावा शिक्षको को पगार सही न मिलने के कारण अपनी कक्षा और छात्रो से उन की कम होती दिलचस्पी है। जो उन को नही विद्यार्थियो को भी नुकसान देती है। विशेषतः के साथ पंजाबी प्राथमिक पाठशालाओ में तार चलने वाली प्रकिया है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालको का सर्वागण विकास करना होता है। शिक्षा को त्रिमुखी प्रकिया कहा गया है। अर्थात विद्यार्थी तथा पाठयक्रम।

परिभाषा

1. शिक्षा से मेरा तात्पर्य उस प्रशिक्षण से है। जो बालको के सदगुण की मूल प्रवृत्ती के लिये उपयुक्त आदतो के निर्माण द्वारा प्रदान किया जाता है।
2. स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मास्तिष्क का सृजन शिक्षा है। प्लॅटो

आज शिक्षा का दायरा व्यापक हो गया है। शिक्षा शिक्षक व विद्यार्थियो के बिच एक विशष संबंध स्थापित करती है। परंतु आज के वैज्ञानिक युग के छात्र शिक्षक कि बातो को ध्यान से नही सुनते ना ही कक्षा में अध्यापन करते समय उनका ध्यान शिक्षा की और होता है। इसका मुख्य कारण वह वातावरण है। जो छात्रो को उनके घरो में मिल रहा है। आज शिक्षा के क्षेत्र को शिक्षक पाठयक्रम व विद्यार्थि के त्रिकोंण से फलाकर उसमें पालको का समावेश करना अतिअवश्यक हो गया है आज इस वैज्ञानिक युग मे भी अपने बच्चो को पंजाबी सेपढाने वाले पालक प्रथमिक शिक्षा पाने के लिये स्कूलो मे अपने नन्हे बालको को प्रवेश दिलवाने के समय लाकर छोडने के बाद सब कुछ शिक्षको पर छोडकर निश्चित हो जाते है। कि हमारी जोखिम हमारे पलको के प्रती हमने पूरी कर दि अब सब कुछ शिक्षको का कर्तवय है। वे इस बात को नही सोचते कि एक पालक पर अपने बच्चे कि इतनी ही जिम्मेवारी नही है। खासकर प्रथमिक स्तर पर तो उनकी जिम्मेदारी बहुत बडी होती है। शिक्षक बालक का कर्ता दर्ता नही है। पालको को इस बात को समझना अतिआवश्यक है। कि बालक पाठशला में तो केवल 6 घंटे परंतु अपने 16 घंटे रहता है। प्राथमिक स्तर का बालक बहुत छोटा है। आर्थत सही गलत कि पहचान नही होती ऐसे मे अगर घर पालक अपने बच्चो के लिये शिक्षा का महत्व समझते शिक्षा का वातावरण निर्माण करते है तो शैक्षिक प्रगति में सरता आ जाती है।

घर का शैक्षिक वातावरण बालक व शिक्षक के लिये भी लाबदायक हो सकता है। अन्यथा अनेक समस्यो का सामना शिक्षक को करना पडता है। बच्चो कि प्रगति के लिये यह समस्याऐ शिक्षक को बालक के उपरी कक्षा जाने तक झेलनी पडती है लेकिन प्रथमिक स्तर पर बालको को प्ररिर्वतन के लिये पालको का सहयोग न मिलने के कारण जो कमी रह जाती है वह उसको पूरी शिक्षा प्राप्त करने कि अवधि मे एक बाधा बनी रहती है।

यह बात आज पंजाबी प्रथमिक छालाओ के छात्रो कि समस्या बन गई है। आज प्रथमिक स्तर पर पंजाबी माध्यम के विद्यार्थियो को हर और से अर्थात सामाजिक, मानसिक, शारिरिक, शैक्षणिक प्रगती मे प्राथमिक स्तर पर पालको का शिक्षको से संपर्क में रहना, छात्रो के शालेय कार्यो में भाग लेते रहना अती आवश्यक बन गया है । जो विविध योजनाओं द्वारा संभावित हो सकता है । इसी कारण हमने शिक्षा की इस प्रक्रिया मे 3 मुख्य मानव घटको को एकत्र किया है। विद्यार्थियो का शारिरिक, मानसिक,बौद्धिक और कुटूंब इन दोनों सामाजिक संस्थाओं पर निर्भर होता है । विद्यार्थीयों का सर्वागिक विकास ये शिक्षक पालक व शिक्षक विद्यार्थि इन के आपसी संबंध पर निर्भर होता है । विद्यार्थीयों के विकास मे शाला और घर का जो महत्व होता हैं इस बात को शिक्षणतज्ञ फोव्रेल ने भी माना हैं । किंतु आज पंजाबी के पालक इस जिम्मेदारी से मुक्त रहना चाहते है । आज के ये नन्हें छात्र कल देश के रखवाले बने तो इन के विकास में कही कोई कमी ना रह जाये । इस कारण संशोधक ने उपरोक्त विषय पर संशोधन कार्य किया है ।

संशोधन विषय के उद्देश्य

1. पंजाबी माध्यम के विद्यार्थीयों की शैक्षिक समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना ।
2. शिक्षक पालक सम्पर्क की कार्यपद्धती मालुम करना ।
3. शिक्षक पालक सम्पर्क में आनेवाली कठीनाईयों और उनके कारण मालूम करना ।
4. शिक्षक पालक सम्पर्क को बढाने के लिए स्कूलों में कौन से कार्यक्रम किये जाते हैं मालूम करना ।
5. शिक्षक पालक संबंध छात्रों में नैतिकता एवं व्यक्तिमत्व प्रगती के लिए किस प्रकार लाभदायक हो सकते है मालूम करना ।
6. शिक्षक पालक संबंध का परिणाम अधिक प्रभावी किस प्रकार किया जा सकता है । मालूम करना ।

संशोधन कार्य पद्धती

संशोधन के लिए संशोधक ने पटियाला जिले के हिंदी,अग्रेंजी, उर्दू और पंजाबी माध्यम की स्कूलों में से सिर्फ 24 पंजाबी माध्यम के स्कूलों का चुनाव अपने संशोधन कार्य के लिए किया हैं। संशोधक ने इन स्कूलों के मुख्याध्यापकों से प्रश्नावालीयों द्वारा अपने विशय के लिए जानकारी प्राप्त की । साथ ही मुख्याध्यापकों से भी मुलाकात की । इस मुलाकात से और प्रश्नावलीयों द्वारा आने वाली जानकारी से अपने संशोसधन कार्य को आगे बढाया ।

अपने संशोधन कार्य को पुरा करने के बाद संशोषक ने कुछ निष्कर्ष प्राप्त किये है । जो निम्नलिखित है ।

निष्कर्ष

1. भाषा विषय को शिक्षक ज्यादा पंसद करते है ।
2. प्राथमिक स्कूल के शिक्षक ज्यादा कथन पद्धती का उपयोग करते है ।
3. शिक्षक पालक संपर्क के कारण बालक का सर्वागीण विकास अवष्य होता है ।
4. ज्यादा से ज्यादा पालक शिक्षित है ।
5. आज के तंत्रज्ञान युग में भी लोग शिक्षक पेशे को ज्यादा पंसद करते है ।
6. पालक बच्चों को हमेशा मार्गदर्षन नहीं करते है।
7. ज्यादा तर पालक मुख्याध्यापक से संर्पक करते है ।
8. पंजाबी माध्यम के पालक मातृभाषा द्वारा छात्रों को शिक्षा देना पसंद करते है ।
9. ज्यादा तर पालक केवल किसी कार्यक्रम में ही बुलाने लर स्कूल में जाते है ।
10. पंजाबी माध्यम से अपने छात्रों को शिक्षा देने वाले ज्यादा तर पालकों की व्यवसायिक स्थिती अच्छी नहीं है ।

संदर्भ ग्रंथ

1. गॅरेट हेनरी ई (1981) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग ग्यारवा संस्करण, दिल्ली कल्याणी पब्लिकेशन ।
2. पाण्डे रामशकल (2007) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, तृतीय संस्करण आगरा प्रकाशन विनोद पुस्तक मंदीर आगरा।
3. राय परस नाथ (2008) अनुसंधान परिचय, आगरा, द्वादशम संस्कारण प्रकाशन लक्ष्मी नारायण अग्रवाल ।
4. तेजस्विनी अनिल कदम (2004) मासिक भारतीय शिक्षण ।
5. देखपांडे के. ना. (2003) ते (2005) पालक संघ प्राथमिक शिक्षण का दर्जा, मासिक शिक्षण समिक्षा ।
6. बेहेरे सुमन (2006) सामाजिक संशोधन नागपुर विद्या प्रकाशन।
7. Journal of Education Planning and Administrative Editor, Niepa 284] Kuchai Cheelan Darya Gunj, New Delhi 112002A